माता पिता और बाल शिक्षा मन्दिर

पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

18.06.2020




प्रताप राय याज्ञिक (पापा), बृजेश कुमारी याज्ञिक (माँ)

माँ, बृजेश कुमारी, और पापा, प्रताप राय याज्ञिक के बारे में कुछ लिखने का आग्रह अरविन्द भाई एक अर्से से करते रहे हैं। पर न जाने क्यों कुछ लिख डालने का साहस अब तक नहीं किया। इस झिझक का एक कारण संभवतः यह रहा कि दादा–दादी और नाना–नानी हमारे जन्म के बाद जीवित न थे, इस कारण हम तीनों बहनों को माँ और पापा के बचपन के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं थी। यह बात पापा के बारे में और अधिक लागू होती है, क्योंकि उन्हें तो अपनी जन्मतिथि तक याद नहीं थी। जबकि माँ के बचपन की कहानियाँ उनके अलावा, जयपुर आने के बाद मौसियों से भी सुनी थीं। बहरहाल, माँ और पापा के बारे में जितना जाना और देखा उसे दर्ज करने की कोशिश अरविन्द भाई के लिए कर रही हूँ।

श्रीमति बृजेश कुमारी लालजी/याज्ञिक

माँ, बृजेश कुमारी लालजी का जन्म 19 मार्च, 1922 को अजमेर, राजस्थान में हुआ था। उनके पिता प्रोफेसर लाालजी श्रीवास्तव, गर्वमेन्ट कॉलेज, अजमेर में भौतिक शास्त्र के व्याख्याता थे। उनकी माँ, श्रीमति रामप्यारी चंद्रिका ने अजमेर में बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सावित्री कन्या पाठशाला की नींव डाली थी। यह शाला कालान्तर में क्रमोन्नत हो सावित्री गर्ल्स कॉलेज में तब्दील हुई। सावित्री कन्या पाठशाला का जो बीज नानी ने बोया और आरंभ में संभाला, उसे नानी की मृत्यु के बाद नानाजी ने, अजमेर के अनेक उदार निवासियों की मदद से कॉलेज तक की कक्षाओं तक क्रमोन्नत कर, एक प्रतिष्ठित संस्था

का रूप दिया। माँ, बृजेश कुमारी की आरंभिक शिक्षा अपनी माँ की शाला में ही हुई। नानी की मृत्यु के बाद कुछ वर्ष उन्होंने प्रयाग विद्यापीठ और तब शान्ति निकेतन में अध्ययन किया। शान्ति निकेतन में उनके अन्य विषयों में गुरुदेव रबीन्द्रनाथ ठाकुर की देखरेख में संगीत तथा विख्यात चित्रकार नन्दलाल बोस की देखरेख में चित्रकला का अध्ययन शामिल रहा। माँ ने अपनी स्नातक स्तर की परीक्षा निजी छात्रा के रूप में दी। हिन्दी में एम.ए. की पढ़ाई उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में की, पर अतंतः परीक्षा में नहीं बैठीं।

1939 या 1940 में माँ ने अड्यार में आयोजित मॉन्तेसरी प्रशिक्षण में भागीदारी की, जिसका संचालन स्वयं मदाम मॉन्तेसरी तथा उनके दत्तक पुत्र मारियो मॉन्तेसरी ने किया था। मॉन्तेसरी प्रशिक्षण के दौरान ही उनका परिचय मेरे पिता प्रताप राय याज्ञिक से हुआ। उन दोनों ने उस ज़माने में स्वयं ही विवाह करने का निश्चय किया। तब तक नानाजी की मृत्यु हो चुकी थी, और पापा तो बचपन में ही अपने माता–पिता को खो चुके थे। पर माँ की बड़ी बहन, श्रीमति सावित्री भारतीया को उनके निर्णय को स्वीकारने के बावजूद लगा कि विवाह परिजनों के समक्ष होना चाहिए ताकि किसी प्रकार की टीका–टिप्पणी का अवसर न रहे। अतः बड़ी मौसी ने, जो उस समय जयपुर राज के शिक्षा विभाग में निरीक्षक के पद पर थीं, नव–दम्पति को जयपुर बुलाया और फिर से समाज के समक्ष विधिवत् विवाह करवाया।

माँ और पापा ने विवाहोपरान्त अहमदाबाद की एक मॉन्तेसरी शाला में शिक्षण कार्य आरंभ किया। इस शाला का नाम मुझे नहीं मालूम। पर यह जानती हूँ कि मेरी बड़ी बहन दूर्वा का जन्म अहमदाबाद में ही हुआ था। कुछ वर्ष अहमदाबाद में शिक्षण कार्य करने के बाद माँ और पापा, लाठ दम्पति के आमंत्रण पर एक मान्तेसरी शाला की स्थापना करने कलकत्ता चले आए। आरंभ में यह शाला, जिसका नाम अभिनव भारती रखा गया, कुछ समय तक बड़ा बज़ार के किसी इलाके में चलती रही। लाठ दम्पत्ति के पुत्र मुकुन्द भाई, व राजा, दोनों ने अपनी आरंभिक शिक्षा अभिनव भारती में ही की। कालान्तर में अभिनव भारती प्रिटोरिया स्ट्रीट के अपने नए भवन में स्थानान्तरित कर दी गई। मेरी बड़ी बहन और मेरी भी पहली शाला अभिनव भारती ही थी। इस शाला की एक घटना मुझे याद है। मैं एक दिन दोपहर को शाला में सोने का समय होने पर हड़बड़ी में अन्दर जाते समय इसी नए शाला भवन की सीढ़ियों से लुढ़की थी और ठुड्डी के बल गिरी थी। अभिनव भारती की स्थापना में सहयोग देने के अलावा माँ ने दो अन्य शालाओं की भी नींव डाली। इनमें एक कलकत्ता में और दूसरी जयपुर में स्थापित की गई थी।

माँ व पापा ने अभिनव भारती के बाद, कलकत्ता में बालीगंज इलाके में बाल शिक्षा मन्दिर की स्थापना की। 1, तिलक रोड में चलने वाली यह शाला, मेरी दूसरी और मेरी छोटी बहन अपूर्वा की पहली शाला थी। बाल शिक्षा मन्दिर में मान्तेसरी कक्षाओं के अलावा कक्षा तीन तक की कक्षाएं थीं। इसमें सेन्सोरियल व एंडवांस्ड सेन्सोरियल गतिविधियाँ करने की स्मृतियाँ मेरे मन में अब तक बसी हैं। एक बड़े हॉल, दो बड़े कमरों व ढ़के बरामदे में चलने वाले बाल शिक्षा मन्दिर की दीवारों पर कुछ चित्र टंगे थे, जिनमें मदाम मान्तेसरी, रबीन्द्र नाथ ठाकुर व गीजू भाई के श्वेत–श्याम चित्र मुझे अब तक याद हैं। हॉल में मान्तेसरी विधि में प्रयुक्त विविध सामग्रियाँ छोटी, खुली अल्मारियों में सजी होती थीं। बाल शिक्षा मन्दिर में ढ़ाई साल की आयु के बच्चों को प्रवेश दिया जाता था और वे अगले तीन–साढ़े तीन वर्ष तक मान्तेसरी विधि की अनेकानेक गतिविधियों को करते हुए शिक्षित होते थे। शिक्षा मातृ भाषा में की जाती थी, जिसका अर्थ था बच्चों को निर्देश देने के लिए हिन्दी या बांग्ला का प्रयोग। पर अंग्रेज़ी के अक्षरों से परिचय भी हिन्दी या बांग्ला के साथ ही आरंभ किया जाता था।

बाल शिक्षा मन्दिर की अनेक गतिविधियाँ मुझे याद हैं, जिनमें संगीत, नृत्य, कविता पाठ, आदि पाठचर्या के नियमित भाग थे। महात्मा गाँधी के जन्म दिवस व पुण्य तिथि पर हिन्दी, बांग्ला, सिन्धी के भजन और संस्कृत के श्लोकों, बाइबल के हिस्से व कुरान की आयतों का सस्वर पाठ भी याद आता है। शाला का वार्षिकोत्सव भी अनूठा हुआ करता था। इस उपलक्ष में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में शाला के हरेक बच्चे को शामिल किया जाता था और अन्त में सभी छात्र–छात्राओं को एक छोटी भेंट मिला करती थी। यह उस समय व आज के प्रचलित फर्स्ट, सैकेण्ड, थर्ड आने वाले बच्चों को पुरस्कृत करने की प्रथा के विपरीत था। बाल शिक्षा मन्दिर का एक वार्षिकोत्सव कलकत्ता के बासुश्री थियेटर में हुआ था। शाला के बच्चों ने एक नृत्य–नाटिका 'मुन्नी' का मंचन किया था। इस वार्षिकोत्सव का वर्ष तो विस्मृत हो चुका है, पर इसके मुख्य अतिथि महाकवि निराला थे। माँ की शान्तिनिकेतन में शुरू की गई एक ऑटोग्राफ बुक थी, जिसमें गुरूदेव, नन्दलाल बोस, मदाम मान्तेसरी, व भारत में मदाम मान्तेसरी के प्रतिनिधि मिस्टर यूस्टन, आदि के हस्ताक्षर दर्ज थे। इस ऑटोग्राफ बुक को लेकर माँ ने मुझे निराला जी के पास भेजा था। उन्होंने उस पर जो दर्ज किया वह मानस पटल पर छप सा गया था : ''तुम बहुत भली, मैं बहुत बुरा / तुम खिली कली, मैं खुला छुरा।''

बाल शिक्षा मन्दिर का शिक्षण शुल्क अधिक न था। अतः इसका संचालन माँ के लिए कई बार बेहद कठिन हो जाता था। पापा ने आर्थिक कठिनाईयों व अपनी रुचि के चलते कलकत्ता विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. किया और संभवतः 1956–57 में चारूचन्द्र कॉलेज में हिन्दी के व्याख्याता व बाद में हिन्दी के विभागाध्यक्ष बने। पर माँ पूरी तरह मान्तेसरी पद्धति से छोटे बच्चों की शिक्षा को समर्पित थीं। याद आता है कि कई बार शाला के मासिक व्यव की पूर्ति के लिए माँ ने ट्युशन देने का कार्य भी किया था। कलकत्ता से मदाम मान्तेसरी के प्रतिनिधि मिस्टर यूस्टन व श्री पिल्लई (उन दक्षिण भारतीय सज्जन का शायद यही नाम था) मान्तेसरी कोर्स का संचालन करते थे। मिस्टर यूस्टन एक पत्रिका 'अराउन्ड द चाइल्ड' का संपादन भी करते थे। माँ, बाल शिक्षा मन्दिर का संचालन व उसमें अध्यापन करने के अलावा समय निकाल कर न केवल इस पत्रिका के लिए लेखन का कार्य करती थीं, बल्की उन्होंने 'अराउन्ड द चाइल्ड' के कुछ अंकों का संपादन भी किया था। बाल शिक्षा मन्दिर का संचालन माँ ने 1961 में जयपुर चले जाने तक किया।

1961 में जयपुर में माँ ने शिक्षा संस्थान नामक शिक्षण संस्था के लिए बाल भारती नाम से जयपुर में एक मान्तेसरी शाला की स्थापना की। बाल भारती की परिकल्पना एक आदर्श शाला के रूप में की गई थी, जिसमें शिक्षण शुल्क माता–पिता की आय के आधार पर लिया जाता था। जयपुर में तब तक एक भी मान्तेसरी शाला नहीं थी। अतः माँ को जयपुर आमंत्रित किया गया। शिक्षा संस्थान से अनेक प्रबुद्ध लोग जुड़े थे, जिसमें डॉ. मोहन सिंह मेहता, तत्कालीन वाइस चांसलर, राजस्थान विश्वविद्यालय; भगवत सिंह मेहता, तत्कालीन मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार; रामसिंह चौहान, तत्कालीन गृह सचिव, राजस्थान सरकार, भी शामिल थे। आरंभ में बाल भारती का संचालन एक किराए के परिसर में जयपुर के बापू नगर इलाके में चलाया गया। बाद में बजाज नगर में सरकार द्वारा आवंटित ज़मीन में संभवतः 1965–66 में इसका भवन निर्मित हुआ। परिसर में ही टीचर्स क्वार्टर्स् व कार्मिक क्वार्टस भी बनाए गए थे। जिस समय माँ हम तीनों बहनों के साथ प्रिंसिपल्स् क्वार्टर में रहने आईं, तो उसके सभी कमरों के दरवाज़े तक नहीं लगे थे।

वित्तीय प्रबंधन की ज़िम्मेदारी से मुक्त हो माँ बाल भारती को एक उत्कृष्ट शाला का रूप देने में जुट गईं। उनका विश्वास था कि शिक्षा के आरंभ में ही अगर मज़बूत नींव डाली जाए तो बच्चे आगे आसानी और सहजता से सीखते हैं। बाल भारती की शुरूआत एक प्राथमिक शाला के रूप में हुई थी। उन्होंने अच्छे व प्रशिक्षित शिक्षकों के चयन की प्रक्रिया आरंभ की। चयन के बाद, मान्तेसरी व पाँचवी तक की कक्षाओं के शिक्षकों के पुर्नअभिमुखीकरण के प्रयास किए। बात–बात पर बच्चों पर हाथ छोड़ने और शारीरिक दण्ड ने वाले शिक्षकों की इस आदत को छुड़ाने की सतत् चेष्टाएं कीं। गौर तलब है कि उन्हें अपने प्रयासों में शिक्षा संस्थान के प्रबंध मण्डल से पूर्ण समर्थन मिला। बाल भारती में भी शिक्षण का माध्यम हिन्दी ही रखा गया, हालांकि बाल शिक्षा मन्दिर की तरह यहाँ भी अंग्रज़ी दूसरी भाषा के रूप में आरंभ से ही सिखाई जाती थी। छात्र–छात्राओं का सर्वांगीण विकास के लिए बाल सभाएं, संगीत व शारीरिक शिक्षा पर ध्यान दिया गया। बच्चों की प्रगति से माता–पिता व अन्य लोगों को परिचित करवाने के लिए माँ ने यहाँ भी वार्षिकोत्सवों का सिलसिला आरंभ किया। ये उत्सव आरंभ में छोटे स्तर पर शाला परिसर में ही आयोजित किए गए। याद आता है कि राजस्थान के तत्कालीन मुख्य मंत्री, श्री मोहनलाल सुखाड़िया, बाल भारती के दूसरे या तीसरे वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए थे। बाद के कई वार्षिकोत्सव जयपुर के प्रख्यात रवीन्द्र भवन में होने की स्मृति मुझे है।

माँ को कलकत्ता में 'अराउन्ड द चाइल्ड' में बच्चों की समझ और प्रगति पर अपने अवलोकनों के लेखन का व पत्रिका संपादन का जो अनुभव था, उसे आधार बना उन्होंने बाल भारती में भी एक वार्षिक पत्रिका का संपादन करना आरंभ किया। इस पत्रिका में शिक्षक अपने शिक्षण अनुभव व अवलोकनों को लिखें इसके लिए उन्हें वे लगातार प्रोत्साहित किया करती थीं। पत्रिका का प्रकाशन ठीक किस वर्ष से शुरू हुआ, पत्रिका हर वर्ष प्रकाशित होती थी या नहीं, यह सब तो मुझे याद नहीं है, पर इस पत्रिका की भी कुछ प्रतियाँ, अराउन्ड द चाइल्ड की कुछ प्रतियों के साथ, आज भी जयपुर में सुरक्षित हैं।

बाल भारती कालान्तर में प्राथमिक से माध्यमिक और तब उच्च माध्यमिक स्तर तक क्रमोन्नत किया गया। बाल भारती को कुछ समय बाद सरकारी मान्यता व वित्तीय सहायता प्राप्त होने लगी। शाला के प्राथमिक से माध्यमिक बनने पर माँ ने बाल भारती के प्रबंधन से आग्रह पूर्वक कहा कि एम.ए. की डिग्री न होने के कारण वे प्रधानाध्यापिका के पद पर नहीं रह सकतीं। अतः माध्यमिक स्तर की कक्षाओं के लिए एक सेवा निवृत्त प्रधानाध्यापक की नियुक्ति की गई। पर याद आता है कि बाल भारती में बिताया उनका बाद का अनुभव बहुत सुखद नहीं रहा। माध्यमिक व बाद में उच्च माध्यमिक कक्षाओं के प्रधानाध्यापकों के साथ वैचारिक मतभेद उन्हें कष्ट देते रहे। पर मान्तेसारी व कक्षा पाँच तक के नन्हों की शिक्षा का मोह उन्हें लगातार जूझते रहने की ऊर्जा भी देता रहा। 25 जून, 1979 में अपनी मृत्यु तक माँ इसी शाला से जुड़ी रहीं।

श्री प्रताप राय याज्ञिक

पपा, प्रताप राय याज्ञिक का जन्म भावनगर के निकट स्थित करदेज गाँव में हुआ था। अपने माता–पिता को उन्होंने कम उम्र में खो दिया। उनका पालन–पोषण अनके चाचा व चाची ने किया, जो उनकी मासी भी थीं। पापा के पिता, यानी मेरे दादाजी, अम्बालाल याज्ञिक, करदेज में भावनगर राज द्वारा संचालित शाला के अध्यापक थे। दादाजी की एक हस्तलिखित पुस्तक मैंने किशोरावस्था में पापा के कलकत्ता वाले पुस्तकालय में देखी थी। यह पुस्तक करदेज के भूगोल पर थी। उसमें गाँव के पास की नदी, तालाब, पहाड़ियों आदि

का उल्लेख था। पर पापा के कलकत्ता से जयपुर आने के बाद वह मुझे फिर नहीं दिखी। बहरहाल शिक्षा के प्रति पापा की लगन ने उन्हें लगातार स्वयं को शिक्षित करने के रास्ते तलाशने को प्रेरित किया। याज्ञिक परिवार के बालक के रूप में उनकी आरंभिक शिक्षा में संस्कृत शामिल थी। मैट्रिक करने के बाद उन्होंने जे. जे. स्कूल ऑव आर्टस्, मुम्बई, में चित्रकला का कोई कोर्स किया। बाद में भावनगर में गीजू भाई की बाल शाला से उनका परिचय हुआ। मुझे नहीं पता कि पापा ने वहाँ कुछ समय पढ़ाया था या नहीं। पर यह जानती हूँ कि गीजू भाई की बाल शाला से प्रेरणा ले उन्होंने भी अड्यार में जा मॉन्तेसरी प्रशिक्षण लेने का निश्चय किया।

मॉन्तेसरी प्रशिक्षण के बाद उन्होंने अपनी पत्नी बृजेश कुमारी के साथ कुछ वर्षों तक अहमदाबाद में एक शाला में कार्य किया। 1945 में प्रताप राय याज्ञिक व बृजेश कुमारी, श्री मोहन लाल लाठ व श्रीमति ज्ञान बाई लाठ के आमंत्रण पर कलकत्ता आए। कलकत्ता में अभिनव भारती की स्थापना में वे सहयोगी बने। बाद में उन्होंने माँ के साथ बाल शिक्षा मन्दिर की स्थापना की। पर पापा का जिज्ञासु मन माँ की तरह छोटे बच्चों की शिक्षा में नहीं लगा। शिक्षा के ही क्षेत्र में आगे बढ़ने की छटपटाहट उन्हें सताने लगी। अतः उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी में एम.ए. करने का निर्णय लिया। एम.ए. कर उन्होंने चारुचन्द्र कॉलेज में हिन्दी के व्याख्याता और कालान्तर में विभागाध्यक्ष के रूप में काम किया। उनका देहान्त 1 मई, 1991 में हुआ।

पापा का पुस्तक प्रेम गहरा था और लगातार पढ़ते–बढ़ते रहने का अदम्य उत्साह था। वे संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेज़ी, मराठी व गुजराती भाषाओं व लिपियों को पहले से ही जानते थे। कलकत्ता आने पर उन्होंने बांग्ला पढ़ना–लिखना भी सीख लिया था। पर जब माँ 1961 में हम तीनों बहनों के साथ जयपुर आ गईं, पापा कलकत्ता में ही चारूचन्द्र कॉलेज में अध्यापन का कार्य करते रहे। स्वयं को खाली समय में व्यस्त रखने के लिए उन्होंने नई भाषाओं को सीखना आरंभ किया। गरियाहाट के पास स्थित रामकृष्ण मिशन में शाम के समय विभिन्न भाषाओं के कोर्स आयोजित किए जाते थे। पापा ने वहाँ अरबी, फारसी, उर्दू, सिन्धी व तमिल भाषाओं को सीखा। इन सभी भाषाओं की प्रवेशिकाओं के अलावा अन्य पुस्तकें उनके संग्रह में शामिल होती गईं। याद आता है कि उन्होंने एक बार अपूर्वा और मुझको उर्दू पढ़ना–लिखना सिखाना आरंभ किया था। मैं तो अलिफ, बे, पे, ते, से आगे न बढ़ सकी पर अपूर्वा ढंग से पढ़ना सीख गई।

पापा के पास विविध विषयों की किताबें थीं। जयपुर आ जाने के बाद जब हम गर्मियों की छुट्टियों में कलकत्ता जाते थे, तो पापा का आग्रह रहता कि हम सुबह के समय किताबें पढ़ें। याद आता है कि फर्श से छत तक बने लकड़ी के खुले आलों में रखी किताबों से तलाश कर मैंने जॉर्ज बर्नर्ड शॉ के अनेक नाटक पढ़े थे। बाद में पेन्गुइन द्वारा प्रकाशित किताबों में से एक (जिसकी जिल्द तो याद है पर लेखक का नाम नहीं) जो विश्व भर की प्राचीन सभ्यताओं के इतिहास पर थी, मेरे हाथ लगी थी। जुल्स वर्न की एक पुस्तक का गुजराती अनुवाद भी इन्हीं किताबों में मिला था। उसका गुजराती शीर्षक था 'साहसिको नी सृष्टि'। यह 'ट्वैन्टी थाउसन्ड लीग अंडर द सी' का अनुवाद था। इसे पढ़ने के चक्कर में मैं गुजराती लिपि से परिचित हो गई और गुजराती लेखक झवेरचन्द मेघाणी के कई उपन्यासों व कहानियों को पढ़ सकी। माँ व पापा दोनों हिन्दी साहित्य के प्रेमी थे, सो प्रेमचन्द से आरंभ कर प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी वर्मा, दिनकर, अज्ञेय, आदि तमाम कवियों, कहानीकारों की पुस्तकें घर में उपलब्ध थीं। पापा के पुस्तक संग्रह में अनेक किताबें प्राकृतिक चिकित्सा पर भी थीं। पापा की सेवा निवृत्ति के बाद यह संग्रह उनके साथ कलकत्ता से जयपुर आया। जयपुर के घर में उनके कमरे में उनके संग्रह के लिए सीमेन्ट के आले बनवाए गए थे।

माँ और पापा ने अपनी–अपनी तरह शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दिया। साथ ही अपने नितान्त भिन्न स्वभावों के संयोग से हम तीनों बहनों को पाला–पोसा और शिक्षित किया। उनको स्नेह से याद कर पाने के इस अवसर ने मुझे कोविड के आतंक से भरे इस वातावरण में भी खुशी दी है।



बाल शिक्षा मन्दिर के बच्चों के साथ खेलकूद करते हुए माँ, पापा व रमणा दी (मॉन्तेसरी प्रशिक्षित शिक्षिका)



रमणा दी, माँ व पापा बच्चों के साथ गीत–कविताओं का सत्र करते हुए








EDUCATIONAL GUIDANCE
INSTITUTE





बाल शिक्षा मन्दिर की गतिविधियों के अन्य चित्र